बुनियादी शिक्षा में उतार-चढाव
17 मई 2023

शिक्षा की दुनिया में सभी लोग "असर" (ASER - Annual Status of Education Report) से वाकिफ हैं | पूरे देश में सभी जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में यह सर्वेक्षण सैंपल के रूप में घर-घर जा कर किया जाता है | मुख्यत: – इस सर्वेक्षण में तीन जानकारी ली जाती है | बच्चा विद्यालय में नामांकित है या नहीं? किस विद्यालय में नामांकित है - सरकारी या निजी ? किस कक्षा में है? हर बच्चे के साथ व्यक्तिगत रूप से दो गतिविधियाँ भी की जाती हैं – कुछ पढ़ने के लिए दिया जाता है (अक्षर, शब्द, आसान अनुच्छेद और छोटी कहानी) और कुछ साधारण गणित के सवाल भी दिये जाते हैं |

असर सर्वेक्षण 2005 से 2014 तक प्रतिवर्ष किया गया | 2014 के बाद सर्वेक्षण हर दूसरे वर्ष यानि 2016, 2018 में किया गया, इसी कड़ी में 2020 में यह सर्वेक्षण होना था, किन्तु महामारी की वजह से 2020 में यह सर्वेक्षण आयोजित नहीं हो पाया | 2018 के चार साल के उपरांत 2022 में एक बार फिर से देश-व्यापी असर सर्वेक्षण हुआ | असर 2022 में 616 जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँच कर लगभग सात लाख बच्चों व् उनके परिवारों से मुलाकात कर जानकारी ली गई | हर वर्ष की भांति असर 2022 सर्वेक्षण के नतीजे, जनवरी 2023 में प्रकाशित हुए |

2018 और 2022 के चार वर्षों में देश में बहुत कुछ हुआ | 2018 से 2020 तक स्वाभाविक रूप से विद्यालय चले| 2020 में महामारी के कारण स्कूल बंद हो गए | राज्यों ने अपने परिस्तिथियों के अनुरूप अलग-अलग समय पर विद्यालय दोबारा शुरू किया | अप्रैल 2022 तक भारत के सभी विद्यालय खुल चुके थे | सितम्बर-अक्टूबर 2022 में जब तक असर सर्वेक्षण किया गया तब तक हर राज्य में स्कूल खुले कुछ ही महीने हुए थे | असर 2018 और असर 2022 के आंकड़ो की तुलना करते वक़्त ये बातें भी याद रखनी जरूरी है| महामारी के परेशानियों के बीच सभी के मन में दो बातों का भय था – परिवार में आर्थिक मजबूरियों के वजह से बच्चे शायद विद्यालय में वापस नहीं आयेंगे और विद्यालय बंद होने के कारण बच्चों की पढ़ाई में बहुत नुकसान हुआ होगा |

असर 2022 इन सवालों का स्पष्ट उत्तर देता है | पहली बात, 2022 में सरकारी स्कूलों में नामांकन बढ़ा है | 2018 में 6-14 आयु वर्ग के 97.2% बच्चे नामांकित थे, यह आंकड़ा 2022 में बढ़कर 98.4% तक पहुँच गया | इसी के साथ – साथ, 2022 में हर राज्य में सरकारी स्कूल में नामांकन 2018 से ज्यादा है | पूरे देश पर एक नज़र अगर डालते हैं: 2010 से 2018 तक सरकारी स्कूलों में नामांकन गिरते - गिरते 65.6% तक पहुँच गया था किन्तु 2022 में यह आंकड़ा लगभग 73% तक चढ़ गया है| दूसरी बात, जब हम बच्चों के बुनियादी पढ़नें व् गणित हल करने की स्थिति को देखें तो उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखण्ड के अलावा, हर राज्य में प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के पढ़ाई का स्तर 2018 की तुलना में 2022 में काफी कमजोर दिखता है |

यहाँ छत्तीसगढ़ का उल्लेख करना ज़रूरी होगा – यह एक ऐसा राज्य है जहाँ 2021 में महामारी के बीच में राज्य सरकार के अनुरोध और सहायता से असर सर्वेक्षण किया गया | असर 2021 के आंकड़ों को अगर 2012 से 2018 और फिर 2022 के परिपेक्ष्य में देखा जाये तो एक दिलचस्प चित्र उभर कर आता है | उदाहरण के तौर पर, कक्षा तीन पर ध्यान देते हैं - पिछले दस साल का असर डेटा दिखाता है कि 2012 में कक्षा 3 के लगभग 20% बच्चे कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ पाते थे | 2018 तक बच्चों का यह प्रतिशत बढ़कर लगभग 30% तक आ पहुंचा था | महामारी के दौरान तीसरी कक्षा के बच्चों के पढ़नें का स्तर घट कर 12.3% हो गया किन्तु असर 2022 सर्वेक्षण होते-होते पुनः यह प्रतिशत बढ़कर 24.4 तक पहुंचा | कक्षा तीन की भांति ही अन्य कक्षाओं के बच्चों की पढ़नें और गणित हल कर पाने की कहानी भी कुछ इसी तरह की है |

इन आंकड़ों से हमें क्या समझना चाहिए? पहली बात, बहुत बधाई छत्तीसगढ़ के समस्त शिक्षकों को - महामारी के दौरान राज्य में बच्चों के सीखने के स्तर में चिंतनीय गिरावट हुई थी लेकिन 2021 और 2022 के बीच उल्लेखनीय "रिकवरी" हुई है | जितनी प्रगति महामारी के पहले छः-आठ साल में हुई, लगभग उतनी ही प्रगति 2021-2022 के बीच दिख रही है | दूसरी बात – अगर निपुण भारत के लक्ष्य को हासिल करना है तो अगले 3-4 वर्षों में, हर वर्ष बड़े और ठोस कदम लेने होंगे | यदि हम कक्षा तीसरी के उदाहरण को सामने रखें तो आज कक्षा 3 में सिर्फ 25% बच्चे ही कक्षा के स्तर पर हैं, इस प्रतिशत को वर्ष 2026-2027 तक बढ़ाकर लगभग 100% तक ले जाना है |

सही समय पर उपयोगी आंकड़े मिल जाते हैं तो आगे की दिशा दिखाई देने लगती है|

रुक्मिणी बनर्जी